**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

# बालिका शिक्षा की आवश्यकता: एक अध्ययन

**संगीता मांझू शोधार्थी श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय हनुमानगढ़**

**डॉ. प्रेमलता यादव शोध पर्यवेक्षक श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय हनुमानगढ़**

## सार

*बालिका शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण योगदान बालिका विद्यालयों का होता है परंतु वर्तमान में भी ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां बालिका विद्यालयों का अभाव है। इसके अतिरिक्त बालिका विद्यालयों के निर्माणए उनके क्रियान्वयन तथा वार्षिक खचं से संबंधित अभाव के चलते कई बालिका विद्यालयों को बंद करना पड़ा है जिसका सीधा सा प्रभाव उस क्षेतर से पढने आने वाली बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था पर पड़ा है। तथा विद्यालयों का उनके निवास स्थान से दूर स्थापित होना भी एक प्रमुख कारण है। प्राय यह देखा जाता है कि प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर चुके बालिकाएं हैं माध्यमिक विद्यालय दूर होने पर पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देती हैं अथवा छुड़वा दी जाती है। बालिका शिक्षा की अत्यंत कमजोर स्थिति को समझने हेतु निम्न आंकड़ों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 64. 46 फीसदी है जबकि इसके विपरीत पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 फीसद दर्ज की गई है। इसके अतिरिक्त कई अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत में वर्तमान में भी 142 मिलियन महिलाएं ऐसी है जो पढ़ने लिखने में असमर्थ है अर्थात शिक्षा से वंचित रह गई है। बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए स्वामी विवेकानंद का कहना था कि, ष्वही देश उन्नति कर सकते हैं जहा स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया जाता है। गांधी जी के शब्दों में बालिका शिक्षा, "बालिकाओं को भी वही शिक्षा दी जाए जो पुरुषों के लिए उपलब्ध हो। यदि हो सके तो उन्हें विशेष सुविधाएं मिलनी चाहिए।*

**मुख्यशब्द :-** बालिका, शिक्षा, पृष्ठभूमि

## परिचय

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि तथा विकास में शिक्षा का अद्वितीय स्थान रहा है। शिक्षा का परंपरा को उस राष्ट्र के नागरिकों तथा राष्ट्रीय उन्नति का द्योतक माना गया है। भारतीय परिवेश में बालिकाओं के विषय में शिक्षा की पृष्ठभूमि अत्यंत ही संघर्षों से परिपूर्ण रही है। भारतीय संस्कृति की पितृसत्तात्मक विशेषताएं बालकों की तुलना में बालिकाओं को विकास की कम अवसर प्रदान करती है। जिनके प्रभाव को बालिकाओं के विकास के प्रत्येक स्तर पर निम्न स्थिति को प्रदर्शित करते हुए देखा जा सकता है। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह उम्मीद थी कि बालिका विकास की दिशा में महत्वपूर्ण तथा प्रभावी कदम उठाए जाएंगे अथवा पितृसत्तात्मक समाज की नींव को कमजोर किया जाएगा परंतु इस विषय पर आशा के विपरीत परिणाम प्राप्त हुए हैं।

बालिका शिक्षा की अत्यंत कमजोर स्थिति को समझने हेतु निम्न आंकड़ों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 64.46 फीसदी है जबकि इसके विपरीत

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 फीसद दर्ज की गई है। इसके अतिरिक्त कई अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत में वर्तमान में भी 142 मिलियन महिलाएं ऐसी है जो पढ़ने लिखने में असमर्थ है अर्थात शिक्षा से वंचित रह गई है। बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए स्वामी विवेकानंद का कहना था कि, ष्वही देश उन्नति कर सकते हैं जहा स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया जाता है। गांधी जी के शब्दों में बालिका शिक्षा, "बालिकाओं को भी वही शिक्षा दी जाए जो पुरुषों के लिए उपलब्ध हो। यदि हो सके तो उन्हें विशेष सुविधाएं मिलनी चाहिए।

भारत में बालिका शिक्षा की अवधारणा का जन्म वैदिक काल से ही माना जाता है । वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति को पुरुषों के समतुल्य माना गया है। इसके अतिरिक्त वेदों में भी नारी की शिक्षाए शील ए गुणए कर्तव्य तथा अधिकारों का विशद वर्णन मिलता है। बालिका शिक्षा की आवश्यकता को सिद्ध करने की दृष्टि से समाज में फैली उन समस्त सामाजिक कृतियों का विश्लेषण किया जाना अति आवश्यक है जिनका प्रभाव प्रतिदिन किसी ना किसी स्थान पर बालिकाओं अथवा महिलाओं पर पड़ता है। बालिकाओं को शिक्षित करना इसलिए भी अति महत्वपूर्ण है क्योंकि बालिका के शैक्षिक विकास के बिना राष्ट्र का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। भारतीय संविधान में महिला तथा पुरुषो को समानता का दर्जा हासिल है संविधान के अनुच्छेद 45 के तहत 14 वर्ष से कम आयु के बालक तथा बालिकाओं को अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया। समाज में व्याप्त विसंगतियों के फल स्वरुप बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने की उत्तर में बढ़ोतरी देखी जा सकती है।

## उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में बालिकाओं के नामांकन का अध्ययन करना ।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं की अनुपस्थिति का अध्ययन करना ।

## परिकल्पना

1. शिक्षा के क्षेत्र में विशेषकर उच्च शिक्षा में ग्रामीण लड़कियों की स्थिति का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि इन लड़कियों की संख्या अन्य वर्ग की महिलाओं की अपेक्षा नगण्य है।
2. केन्द्रीय विश्वविद्यालय बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय लखनऊ विश्वविद्यालय की अपेक्षा नामांकित ग्रामीण लड़कियों की स्थिति में सामाजिक, आर्थिक, एवं शैक्षिक अन्तर देखने को मिलता है।

## बालिका शिक्षा के समक्ष चुनौतियां

### 1. आर्थिक समस्या

भारत में प्राय यह देखा जाता है कि भारत के अधिकतर आबादी ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन करती है अर्थात भारत में आर्थिक तौर पर कमजोर वों का अनुपात सर्वाधिक है आता है आर्थिक स्थिति का कमजोर होना बालिकाओं को उनके शिक्षा के अवसरों से वंचित कर देता है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

करने वाले निर्धन परिवारों में बालिकाओं के शिक्षा संबंधी खर्चों को वहन करने की क्षमता नहीं होती या आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए पारिवारिक सदस्यों द्वारा बालिका शिक्षा को अनुचित समझा जाता है अथवा उन्हें घर का स्थाई सदस्य नहीं समझा जाता।

### 2. रूढ़ीवादी परंपराएं

रूढ़ीवादी परंपराओं के अंतर्गत वे परंपराएं उत्तरदाई होती है जो पितसत्तात्मक सामाजिक व्यूह रचना का निर्माण करती हैं। सामाजिक रूढ़िवादिता का परिणाम है कि आज भी भारत में जेंडर समानता जैसे मुद्दे काफी चर्चित रहते हैं। रूढ़ीवादी परंपराओं के अंतर्गत रूढ़िवादी सोच का अहम किरदार होता है जिसके अंतर्गत बालिकाओं अथवा महिलाओं को गृह प्रबंधन के लिए ही उपयोगी समझा जाता है रूढ़ीवादियों का मानना है कि बालिकाएं अपने से छोटे भाई बहनों की देखभाल घर की साफ सफाई मैं संलग्न होनी चाहिए अर्थात इनके अनुसार बालिकाओं की शिक्षा को सर्वदा उचित नहीं समझा जाता है।

### 3. बालिका विद्यालयों की समस्या

बालिका शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण योगदान बालिका विद्यालयों का होता है परंतु वर्तमान में भी ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां बालिका विद्यालयों का अभाव है। इसके अतिरिक्त बालिका विद्यालयों के निर्माणए उनके क्रियान्वयन तथा वार्षिक खचं से संबंधित अभाव के चलते कई बालिका विद्यालयों को बंद करना पड़ा है जिसका सीधा सा प्रभाव उस क्षेतर से पढने आने वाली बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था पर पड़ा है। तथा विद्यालयों का उनके निवास स्थान से दूर स्थापित होना भी एक प्रमुख कारण है। प्राय यह देखा जाता है कि प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर चुके बालिकाएं हैं माध्यमिक विद्यालय दूर होने पर पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देती हैं अथवा छुड़वा दी जाती है।

### 4. ग्रामीण क्षेत्रों में पिछड़ापन

भारत में अधिकतर जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की निम्न स्थिति के कारण पिछड़ापन एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में व्याप्त है। ग्रामीण पिछड़ेपन का व्यापक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर भी देखने को मिलता है। मातापिता द्वारा बालिकाओं को कृषि कार्यों में अथवा पशुओं के प्रबंधन में उचित समझा जाता है जबकि उनके विद्यालय आने जाने अथवा पढ़ने संबंधी मुद्दों पर असामंजस्य जैसी स्थिति देखने को मिलती है। छात्राओं में उच्च शिक्षा के विकास को प्रभावित करने वाली समस्याएँरू उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्राओं को कुछ गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

**घर पर लिंग भेदभाव:** लड़के की शिक्षा को प्राथमिकता सबसे पहले परिवार में दी जाती है। लड़की को बिन बुलाए और अनचाही संतान माना जाता है, जो लड़के की तुलना में उचित भोजन, प्यार और देखभाल से वंचित होती है। लड़कियों की शिक्षा गौण महत्व की है और उन्हें घरेलू कामकाज के अलावा किसी भी गतिविधि में भाग लेने की अनुमति नहीं है। इसलिए लड़की का शारीरिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और भावनात्मक विकास सीमित है।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

**शैक्षणिक संस्थान:** घर, स्कूल या कॉलेज के बगल में लड़कियों की उच्च शिक्षा प्रभावित होती है। लड़कियों को पाठ्यक्रम के लेन–देन, किताबों, विषयों के आवंटन, गतिविधियों में भागीदारी आदि में लिंग–पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ता है। संस्थानों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में छात्राओं के लिए पूर्वाग्रह का प्रचार किया जाता है और लड़कियों की शिक्षा की गुणवत्ता शैक्षिक, व्यावसायिक शिक्षा से मेल नहीं खाती है। और व्यक्तिगत विकास समाज में हमारा समाज दृढ़ता से लिंग–पक्षपाती है और एक लड़की से परिवार, पड़ोसियों और अन्य सामाजिक समूहों की अपेक्षा पारंपरिक महिलाओं की है, जिन्हें आज्ञाकारी प्रतिबद्ध गृहिणी, आज्ञाकारी बहू और त्याग करने वाली माँ माना जाता है। उससे मृदुभाषी, शर्मीली, विनम्र, पति और उसके परिवार के प्रति किसी भी प्रकार के अत्याचार के प्रति सहनशील होने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षा में ड्रॉपआउट के महत्वपूर्ण कारण अशिक्षा, गरीबी, पारिवारिक संरचना, खराब पालन–पोषण और अधिक बोझ वाली उच्च शिक्षा प्रणाली हैं।

**सामाजिक समस्याएँ:** लड़कियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक रवैया आमतौर पर नकारात्मक है और लड़कियों की शिक्षा को महत्वहीन माना जाता है, घर पर लड़कियों की जिम्मेदारियाँ, पर्दा प्रथा, कम उम्र में शादी, घर पर शैक्षिक सुविधाओं की कमी, माता–पिता की अशिक्षा, स्कूल में पुरुष शिक्षक आदि। बालिका शिक्षा के कम विकास में बाधक कारक हैं।

**आर्थिक समस्याएँ:** पैसे की समस्या इतनी चुनौतीपूर्ण है कि परिवार का भरण–पोषण करने वाला और बच्चे को पढ़ाने वाला कोई नहीं है। माता–पिता को स्कूल में लड़की के नामांकन का खर्च उठाने में समस्या होती है। भाई–बहनों की देखभाल करने, घर के काम करने, कमाने और पारिवारिक आय में योगदान करने में समस्या होती है।

**शैक्षिक समस्याएँ:** प्रमुख शैक्षिक समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के लिए संस्थानों की कमी है। लड़कियों की शिक्षा के लिए कोई संस्थान और सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। आमतौर पर संस्थाएं पुरुषों के लिए और गांव से दूर स्थित होती हैं। इसके अलावा, संस्थानों में लड़कियों के लिए छात्रावास की सुविधा नहीं है। लड़कियाँ आगे की शिक्षा या प्रशिक्षण संस्थान में शामिल होने के लिए सामाजिक रूप से तैयार नहीं हैं। चूँकि शैक्षिक स्थिति सीधे तौर पर करियर के विकास से जुड़ी होती है, लेकिन उपर्युक्त समस्याएं लड़कियों के शैक्षिक विकास को प्रभावित और प्रतिबंधित करती हैं और उनके करियर के विकास में बाधा डालती हैं। पुरुष छात्रों की तुलना में छात्राओं की माता–पिता, जीवनसाथी, कर्मचारी जैसी कई भूमिकाएँ होती हैं और उन्हें वित्तीय, स्कूल की ज़िम्मेदारियों और बच्चे की देखभाल का अधिक दबाव महसूस होता है ।

वयस्क छात्रों पर रोज़गार, परिवार और जैसी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। वयस्क जीवन की अन्य जिम्मेदारियाँ। दोनों लिंगों को छात्र, कार्यकर्ता और परिवार के सदस्य की भूमिका निभाने में कठिनाई होती है। छात्राओं के सामने अपनी अनेक भूमिकाओं को छात्र भूमिका के साथ संतुलित करना एक प्राथमिक चुनौती है। उनमें बड़ी संख्या में पात्र हैं जैसे माताएं, पति–पत्नी/साझीदार, कर्मचारी और समुदाय के सदस्य। इसलिए, ऐसे छात्रों की जीवनशैली उनके पारंपरिक समकक्षों की तुलना में व्यापक और अधिक जटिल होती है, और उनके पास अतिरिक्त स्कूल गतिविधियों के लिए कम समय होता है। स्कूल आमतौर पर शुरुआती समय

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

से ही वयस्क छात्रों को करियर के लिए परामर्श प्रदान करते हैं पंजीकरण, सलाह देना, अभिविन्यास, अधिक शाम और सप्ताहांत पाठ्यक्रम प्रदान करना, विशेष वित्तीय सहायता, और संकाय और कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना। विशेष रूप से महिला वयस्क छात्रों से निपटने के लिए योग्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे उन बाधाओं और चुनौतियों का सामना करते हैं जो उन्हें पुरुष वयस्क छात्रों से अलग करती हैं। इसलिए, छात्राओं को विशेष सहायता की पेशकश की जानी चाहिए जैसे कि परिवार और स्कूल के काम में संतुलन बनाने की रणनीति। विश्वविद्यालय और कॉलेज पुरुष और महिला दोनों वयस्क छात्रों के लिए सेमिनार पाठ्यक्रम जैसे पाठ्यक्रम या कार्यक्रम भी प्रदान करते हैं। इस तरह, इन छात्रों को अपने अध्ययन अवधि के दौरान ज्ञान के साथ–साथ कौशल सीखने और हासिल करने के अधिक अवसर मिलेंगे और उन्हें अपने भविष्य के अध्ययन और कैंपस जीवन के लिए बेहतर तैयारी मिल सकती है। विभिन्न भूमिकाओं की प्रतिबद्धता, आत्मविश्वास का निम्न स्तर, अपर्याप्त महिला वयस्क छात्रों के लिए परिवार और समाज का समर्थन पुरुष छात्रों के साथ–साथ पारंपरिक समकक्षों की तुलना में उच्च स्तर का तनाव, चिंता उत्पन्न कर सकता है। इससे इन छात्रों को स्कूल छोड़ने का अधिक जोखिम हो सकता है। इसलिए, यह महिला वयस्क विद्यार्थियों के लिए आत्मविश्वास पैदा करना और बाहरी समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है। वयस्क शिक्षार्थियों को उनके जीवन के अनुभवों के माध्यम से शिक्षित किया जाता है, जो बदले में उनके अध्ययन और सीखने में मूल्य लाता है। भारत में महिलाओं की उच्च शिक्षा पर काम किया है और पाया है कि भारत के सामाजिक–आर्थिक स्पेक्ट्रम में शिक्षा में लैंगिक असमानता है। उन्होंने महिला छात्रों की शिक्षा प्रणाली में विशिष्ट शिक्षाशास्त्र और लचीलेपन को विकसित करने की आवश्यकता महसूस की, जो उन्हें अवसरों और चुनौतियों की दुनिया का सामना करने के लिए तैयार करेगी।

## साहित्य समीक्षा

***डॉ. प्रतिभा पाल (2018)*** अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना है। भारतीय परिदृश्य में बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का आंकलन करने की दृष्टि से उन चुनौतियों को समझने का प्रयास किया गया है जो किसी न किसी रूप में बालिकाओं की शिक्षा तथा उनके विकास को प्रभावित करते हैं। उक्त अध्ययन के अंतर्गत बालिका शिक्षा की पृष्ठभूमि का भी विश्लेषण किया गया है ताकि इन परिवर्तनों को भी समझा जा सके जो कालांतर में हुए हैं। अतः इस विषय अध्ययन करना अत्यंत ही कारगर सिद्ध होगा।

***लक्ष्मी मिश्रा (2017)*** उच्च शिक्षा स्तर पर रीति–रिवाज सम्बन्धी समस्याओं में बाल विवाह की समस्या, नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण से सम्बन्धित समस्या, गृहकार्य का अत्यधिक भार, विवाह में समस्या, शिक्षण संस्थाओं सम्बन्धी समस्याओं में महाविद्यालय की घर से अधिक दूरी, महाविद्यालयों में महिला प्राध्यापक की कमी, मनपसंद विषय की अनुपलब्धता, बालक–बालिकाओं के साथ पढ़ने में समस्या, आवश्यक संसाधनों का अभाव, आर्थिक समस्याओं में सीमित आय के नाते, छात्रावासों का बढ़ता शुल्क, यातायात पर होने वाला व्यय, पर्याप्त छात्रवृत्ति प्राप्त न होना, मनोवैज्ञानिक समस्याओं में छींटाकशी व दुर्व्यवहार, अभिभावकों का संकुचित दृष्टिकोण, सामंजस्य स्थापित करने में समस्या, आत्मविश्वास की कमी, जनांकिकीय समस्याओं में परिवार का बड़ा आकार, परिवार में बालिकाओं की अधिक संख्या, संयुक्त पारिवारिक संरचना की समस्या पर शहरी व ग्रामीण बालिकाओं द्वारा सहमति में अन्तर था जो यह स्पष्ट करता है कि शहरी

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

व ग्रामीण बालिकाओं का इन समस्याओं पर दृष्टिकोण भिन्न भिन्न प्राप्त हुआ। वहीं दहजे प्रथा की समस्या, पर्दा प्रथा की समस्या, विवाह योग्य आयु निकल जाने की समस्या, महिला छात्रावासों की कमी, शिक्षकों का उपेक्षित व्यवहार, जागरूरकता का अभाव, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, खराब आर्थिक स्थिति, उच्च शिक्षा पर होने वाला व्यय, बढ़ती महंगाई, महंगी पाठ्यपुस्तकें परीक्षा में अच्छे अंक लान का दबाव, भावात्मक सहयागे की प्राप्ति न होना, पास–पड़ा से का दूषित वातावरण, रूढ़िवादी ग्रामीण परिवेश की समस्या पर शहरी व ग्रामीण बालिकाओं का इन समस्याओं पर दृष्टिकोण समान प्राप्त हुआ।

***आसिया अहमद रेडियोवाला (2018)*** यदि आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं। लेकिन अगर आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप देश को शिक्षित करते हैं। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा तक पहुँचने के लिए ग्रामीण लड़कियों के सामने आने वाली चुनौतियों में योगदान करने वाले विभिन्न आयामों का पता लगाना है। अन्वेषक कारक विश्लेषण का उपयोग विभिन्न आयामों को सूचीबद्ध करने के लिए किया गया था जो ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा तक पहुँचने के लिए ग्रामीण लड़कियों के सामने आने वाली चुनौतियों में योगदान करते हैं। कुल चार कारक निकाले गए पारिवारिक समस्या, व्यक्तिगत समस्या, आधारभूत संरचना और समाज की समस्या 71. 977 प्रतिशत भिन्नता में योगदान करती है। अध्ययन निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा तक पहुँचने के लिए ग्रामीण लड़कियें के सामने आने वाली चुनौतियों में योगदान करने वाले महत्वपूर्ण कारकों का पता लगाने में मदद करता है। पुष्टिकारक कारक विश्लेषण तकनीक को लागू करके आगे के अध्ययन किए जा सकते हैं।

## क्रियाविधि

प्रस्तुत अध्ययन में बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित आकड़े एकत्र करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । इस विधि में व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं (अथवा समष्टियों) का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है, ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रम, वितरणों तथा पारस्परिक अन्त: सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सर्वेक्षण अनुसन्धान का स्वरूप अन्वेषणात्मक होता है तथा इसमें साधारण घटनाओं से सम्बन्धित चरों का अध्ययन किया जाता है । इस विधि का गुण यह है कि इसमें अध्ययन का आधार प्राय: यादृच्छिक प्रतिचयन रहता है, जिससे परिशुद्ध, वस्तुपरक व विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन में सहायता मिलती है ।इसके अतिरिक्त सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन में अधिक सूचना कम खर्च तथा कम समय में उपलब्ध होती है । प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ती ने सर्वेक्षण विधि को चुना क्योंकि इसके माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन अत्यधिक उपयुक्त रहता है । इसके द्वारा शिक्षा सम्बन्धी तथ्यों के संकलन में विशेष सुविधा मिलती है ।

वर्तमान अध्ययन अभिकल्प की दृष्टि से अध्ययन गवेषणात्मक है प्रस्तुत अध्ययन में लखनऊ शहर के केन्द्रीय विश्वविद्यालय बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय एवं राज्य स्तरीय लखनऊ विश्वविद्यालय में नामांकित लड़कियों की स्थिति का अध्ययन करने का प्रयत्न किया जायेगा। यह विवरणात्मक अभिकल्प भी धारण करेगा। इस प्रकार अध्ययन में आवश्यक गवेषणात्मक तथा विवरणात्मक अभिकल्प से सम्बन्धित

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

परिवों एवं उपकरणों का यथास्थान प्रयोग कर अध्ययन पूर्ण किया जायेगा। अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु मान्य स्त्रोतों में प्रायः प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया जायेगा।

## प्राथमिक स्त्रोत

इसके अन्तर्गत अनुभवात्मक पद्धति एवं साक्षात्कर सूची का निर्माण किया जायेगा जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय में विभिन्न छात्राओं का साक्षात्कार लिया जायेगा और सम्बन्धित प्रश्न सूचियों को भरा जायेगा और इस साक्षात्कार के माध्यम से उच्च शिक्षा में दलित महिलाओं की समस्या के प्रत्येक पक्ष पर दृष्टि डाली जायेगी और उनके कारणों का पता लगाया जायेगा और उन छात्राओं के विभिन्न प्रश्नों को साक्षात्कार सूची में लिखा जायेगा।

## द्वितीयक स्त्रोत

इसके अर्न्तगत अध्ययन से सम्बन्धित ग्रन्थों, सरकारी रिपोर्ट, पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, समाचार–पत्र, जनगणना आदि को सम्मिलित किया जायेगा जिनके माध्यम से अध्ययन कार्य पूर्ण करने का प्रयत्न किया जायेगा।

## कार्यप्रणाली

अध्ययन की जनसंख्या में 2021 की अवधि के दौरान ग्रामीण क्षेत्र की छात्राएं शामिल थीं।अध्ययन का नमूनारू उच्च शिक्षा के लिए लड़कियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में डेटा जानकारी प्राप्त करने के लिए ळववहसम फॉर्म पर एक प्रश्नावली विकसित की गई थी। अध्ययन का नमूना आकाररू अध्ययन में हरिद्वार जिले (उत्तराखंड) के चमनलाल महाविद्यालय, लंढौरा की यूजी और पीजी की कुल चार सौ साठ लड़कियों को शामिल किया गया था।

## परिणाम और चर्चा

**तालिका संख्या 1. प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की वार्षिक औसत ड्रॉपआउट दर**

| साल | 2012-2013 | 2013-2014 |
|---|---|---|
| प्रिरारी | 4-66% | 4-14% |
| उच्च प्राथमिक | 4-01% | 4-49% |
| माध्यमिक | 14-54% | 17-79% |
| उच्च माध्यमिक | उपलब्ध नहीं है | 1-61% |

**तालिका संख्या 2. उच्च शिक्षा स्तर पर लड़कियों का सकल नामांकन अनुपात**

| साल | 2012-2013 | 2013-2014 | 2014-2015 |
|---|---|---|---|

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उच्च शिक्षा | 20.1: | 22: | 22.7: |

**तालिका 3. घर और समाज स्तर पर छात्राओं को सामना करने वाली समस्याएँ (एन=460)**

| समस्याएँ | छात्रों की प्रतिक्रियाएँ | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | सकारात्मक (हाँ) | नकारात्मक (नहीं) | (कुल) | उपस्थिति (हाँ) | उपस्थिति (नहीं) |
| लैंगिक भेदभाव | 308 | 152 | 60 | 66.95 | 33.04 |
| समाज की समस्या | 197 | 263 | 60 | 42.82 | 57.17 |
| विवाह संबंधी समस्या | 301 | 159 | 60 | 65.43 | 34.56 |
| आर्थिक **समस्या** | 289 | 171 | 60 | 62ण्82 | 37ण्17 |
| शारीरिक उत्पीड़न से संबंधित समस्या | 151 | 309 | 60 | 32.82 | 67.17 |
| मेंटल तनाव | 193 | 267 | 60 | 41.95 | 58.04 |
| काम के बोझ से जूं होल्ड होने से जुड़ी समस्या | 184 | 276 | 60 | 4 0 | 60 |
| समस्या संबंधित आयन निर्माण है | 184 | 276 | 60 | 4 0 | 60 |

परिणामों से पता चलता है कि घर और समाज के स्तर पर अधिकतम लड़कियों के लिए यौन पूर्वाग्रह प्रमुख समस्या है, इसके बाद कम उम्र में शादी और वित्तीय समस्या है, जो लड़कियों की शिक्षा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने वाले कारक के रूप में पाई गई। घर में घरेलू कामकाज को भी लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक के रूप में बताया गया है। छात्राएं उच्च शिक्षा से दूर रहने के लिए काफी प्रेरित हैं। कॉलेज स्तर पर, वित्तीय समस्या लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है, इसके बाद परिवहन, सह–शिक्षा समस्या, लिंग भेदभाव, शारीरिक उत्पीड़न की समस्या कॉलेज स्तर पर लड़कियों की उच्च शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों के रूप में बताई गई है।

## निष्कर्ष

कुल चार महत्वपूर्ण कारक हैं जिनमें 13 संकेतक चर शामिल हैं जो ग्रामीण महिलाओं के बीच बुनियादी शिक्षा तक पहुंच की चुनौतियों में योगदान करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल स्थापित करके और छात्रवृत्ति सुविधाएं प्रदान करके ग्रामीण महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न उपाय किए जाने चाहिए। विभिन्न अभियानों के माध्यम से बालिकाओं को प्रेरित करके और बालिका शिक्षा के महत्व के बारे में परिवार के सदस्यों की धारणा को बदलकर भी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सकता है। अधिकारियों को असामाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। महिलाओं की पहचान एक गृहिणी, एक अच्छी रसोइया और एक अच्छी माँ होने तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। उसे नए क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने और बौद्धिक व्यावसायिक दुनिया में अपनी खुद की पहचान खोजने का अवसर मिलना

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

चाहिए। यह स्पष्ट होना चाहिए कि विधायिका की प्रक्रिया द्वारा महिलाओं को कुछ अधिकार प्रदान किये जा सकते हैं। घर से बाहर महिलाओं की भूमिका देश के सामाजिक और आर्थिक जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गई है और आने वाले वर्षों में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी। इस दृष्टि से महिलाओं के प्रशिक्षण एवं विकास की समस्याओं पर अधिक ध्यान देना होगा। कई बाधाओं के बावजूद, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और भारत में महिला कार्यबल की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए चुनौतियों का समाधान करना अनिवार्य है। जागरूकता बढ़ाने, वित्तीय सहायता प्रदान करने, सुरक्षा उपायों को बढ़ाने और लिंग समावेशी नीतियों को लागू करने वाली पहल सामूहिक रूप से इन बाधाओं को कम कर सकती हैं और अधिक न्यायसंगत शैक्षिक परिदृश्य का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] अनामिका चौहान (2015)" उच्च शिक्षा में छात्राओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं और चुनौतियों पर एक अध्ययन"

[2] अस्थाना ईश्वर शरण, 2005, "शिक्षा दशा एवं दिशाष, अकादमिक एक्सेलेन्स, दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 44, वोल्यूम–1

[3] अम्बेडकर डॉ. बी. आर., 2013, ष्अछूत कौन थे और वे अछूत कैसे बने", डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 45, वोल्यूम–1

[4] आसिया अहमद रेडियोवाला (2018)" शिक्षा तक पहुँचने में ग्रामीण महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों पर एक अध्ययन"

[5] *ए सेल्वानी (2016)"* उच्च शिक्षा संस्थान में ग्रामीण छात्राओं की समस्या" 45, वोल्यूम–1

[6] डॉ. प्रतिभा पाल (2018)" बालिका शिक्षा की चुनौतियों का विश्लेषण"

[7] गोस्वामी (2017)"एडजस्टमेंट गर्ल्स एंड द डेवलपमेंट ऑफ ए एडजस्टमेंट इनवेंटरी फॉर देयर मेजरमेंट में: शैक्षिक अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण, एम.बी. द्वारा संपादित बुच। 2017.

[8] गुप्ता आर.के., 2003, षजिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमष, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–105, वोल्यूम– 1,

[9] गुप्ता मधु, 2000, षशिक्षा संस्कार एवं उपलब्धिष, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 4, वोल्यूम– 1,

[10] चौबे सरयू प्रसाद, 2004, "कुछ पश्चिमी देशों और भारत में शिक्षाष, कॉन्सेप्ट • पब्लिकेशन कम्पनी, न्यू दिल्ली, प्रष्ठ संख्या– 359–361, वॉल्यूम–4

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

[11] **नवीन कुमार एम.एस. (2016)"** उच्च शिक्षा में ग्रामीण छात्राओं के लिए चुनौतियाँरू मैसूर जिले में एक अध्ययन"

[12] ब्रैडली (2018)" उच्च शिक्षा में महिलाओं का समावेश विरोधाभासी परिणाम?" शिक्षा का समाजशास्त्र। वॉल्यूम। 73.सं. 1.जनवरी 2000. पी. 1–18

[13] भारती डॉ. सत्यप्रकाश, 2003, षशिक्षा के आयामष् अर्जुन पब्लिकेशन, वॉल्यूम–1

[14] लक्ष्मी मिश्रा (2017)" बालिका ि"क्षा को प्रभावित करने वाले कारको ं का वि"लेषणात्मक अध्ययन"

[15] बाउर, डी. और मॉट, डी. (1990)। पुनः प्रवेश करने वाले छात्रों के जीवन विषय और प्रेरणाएँ। जर्नल ऑफ़ काउंसलिंग एंड डेवलपमेंट, 68, 555–560।

[16] 18– बेनशॉफ, जे.एम. और लुईस, एच.ए. (1992)। गैर–पारंपरिक कॉलेज के छात्र (रिपोर्ट संख्या ईडीओ–सीजी–92–16)। वाशिंगटन, डीसीरू शैक्षिक अनुसंधान और सुधार कार्यालय।

[17] चार्ट्रैंड, जे.एम. (1990)। गैर–पारंपरिक छात्रों के व्यक्तिगत और शैक्षणिक समायोजन की भविष्यवाणी करने के लिए एक कारण विश्लेषण। जर्नल ऑफ़ काउंसलिंग साइकोलॉजी, 37(1), 65–73.

[18] क्रॉफर्ड, डी.एल. (2004)। वयस्क शिक्षा में उम्र बढ़ने की भूमिकारू उच्च शिक्षा में प्रशिक्षकों के लिए निहितार्थ। सीखने के लिए नए क्षितिज.

[19] बाजीगरी अधिनियमरू सामाजिक कार्य शिक्षा में महिला की विविध भूमिका। कनाडाई सामाजिक कार्य समीक्षा, 10(2), 141–156।

[20] हस्टन–होबर्ग, एल. और स्ट्रेंज, सी. (1986)। लौटने वाले वयस्क छात्रों में पुरुष और महिला के बीच जीवनसाथी का समर्थन। जर्नल ऑफ़ कॉलेज स्टूडेंट पर्सनेल, 27(5), 388–394।

[21] किंग, पी.एम. और बाउर, बी.ए. (1988)। गैर–पारंपरिक–वृद्ध महिला छात्रों के लिए नेतृत्व के मुद्दे। छात्र सेवाओं के लिए नई दिशाएँ, 1988(44), 77–88।

[22] नंदिता सिंह (2008)। भारत में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा–विकल्प और चुनौतियाँ, फोरम ऑन पब्लिक पॉलिसी, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, भारत, 2008 द्वारा प्रकाशित।

[23] पादुला, एम.ए. (1994)। महिलाओं का पुनरू प्रवेशरू परामर्श और अनुसंधान के लिए सिफारिशों के साथ एक साहित्य समीक्षा। जर्नल ऑफ़ काउंसलिंग एंड डेवलपमेंट, 73, 10–16।

[24] थॉन, ए.जे. (1984)। वयस्क छात्रों की गैर–शैक्षणिक आवश्यकताओं पर प्रतिक्रिया। जर्नल, 21(4), 28–35।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 15 Issue 1,Jan- 2025
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**